|  |
| --- |
| 14. Juli 2024 |
| **15. Sonntag im Jahreskreis B** |
| Erste Lesung: Am 7,12-15; Zweite Lesung: Eph 1,3-14 (oder 1,3-10); Evangelium: Mk 6,7-13 |
|  |  |  |
| Eröffnung: | GL 489, 1-3 | Lasst uns loben |
|  | GL 481, 1+4+5! | Sonne der Gerechtigkeit |
|  |  |  |
| Kyrie: | GL 163, 7 | Herr Jesus, du rufst die Menschen |
|  |  |  |
| Gloria: | GL 168, 1+2 | Gloria. Ehre Gott in der Höhe |
|  |  |  |
| Antwortgesang: | Ps 85,9-14 |
|  | Kehrvers:  |  |
|  | GL 657, 3 | Dein Erbarmen, o Herr |
|  | oder Lied: |  |
|  | GL 446, 1-4 | Lass uns in deinem Namen |
|  |  |  |
| Halleluja-Ruf: | Ruf: GL 174, 8 |  |
|  | Vers: |  |
|  | *Der Vater unseres Herrn Jesus Christus* |
|  | *erleuchte die Augen unseres Herzens,* |
|  | *damit wir verstehen, zu welcher Hoffnung wir berufen sind.* |
|  |  |
| Credo: | GL 491, 1+3! | Ich bin getauft  |
|  |  |  |
| Gabenbereitung: | GL 146, 1-4 | Du rufst uns, Herr, an deinen Tisch |
|  | GL 459, 1-3 | Selig seid ihr |
|  |  |  |
| Sanctus: | GL 193 | Heilig |
|  |  |  |
| Agnus Dei: | GL 202 | O du Lamm Gottes |
|  |  |  |
| Danksagung:  | GL 348, 3+4! | Du stille Macht |
|  | GL 484, 1+6 | Dank sei dir, Vater |
|  | GL 796, 1+4+5 | Herr, wir bitten |
|  |  |  |
| Schluss: | GL 347, 2+4! | Der Geist des Herrn |
|  | GL 360, 5 | Die ihr von Christi Hause seid |
|  | GL 362 | Jesus Christ, you are my life |